1. सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम का सचित्र वर्णन कीजिए।

उत्तर: घटती सीमांत उपयोगिता के नियम के अनुसार, जैसे जैसे किसी वस्तु की एक समान इकाइयों का उपयोग बढता जाता है उससे मिलने वाली सीमांत उपयोगिता घटती जाती है।

इस नियम का प्रतिपादन ऑस्ट्रिया के अर्थशास्त्री एच एच गोशेन ने किया था, अत: इस नियम को गोशेन का प्रथम नियम भी कहा जाता है ।

प्रो. मार्शल के अनुसार. "अन्य बातें समान रहने पर, किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि होने से जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है, वह उस वस्तु की प्रत्येक इकाई की वृद्धि के साथ साथ घटता जाता है।"

घटती सीमांत उपयोगिता के नियम के लागू होने की आवश्यक शर्तें:-

1. उपभोग की जाने वाली वस्तु की सभी इकाइयां गुण तथा परिणाम में समान रहनी चाहिए ।
2. उपभोग निरंतर क्रम में होना चाहिए ।
3. वस्तु की इकाई का आकार पर्याप्त होना चाहिए ।
4. उपभोक्ता के व्यवहार में परिवर्तन नही होना चाहिए।
5. उपभोक्ता की आय, रूचि, आदत और फैशन में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

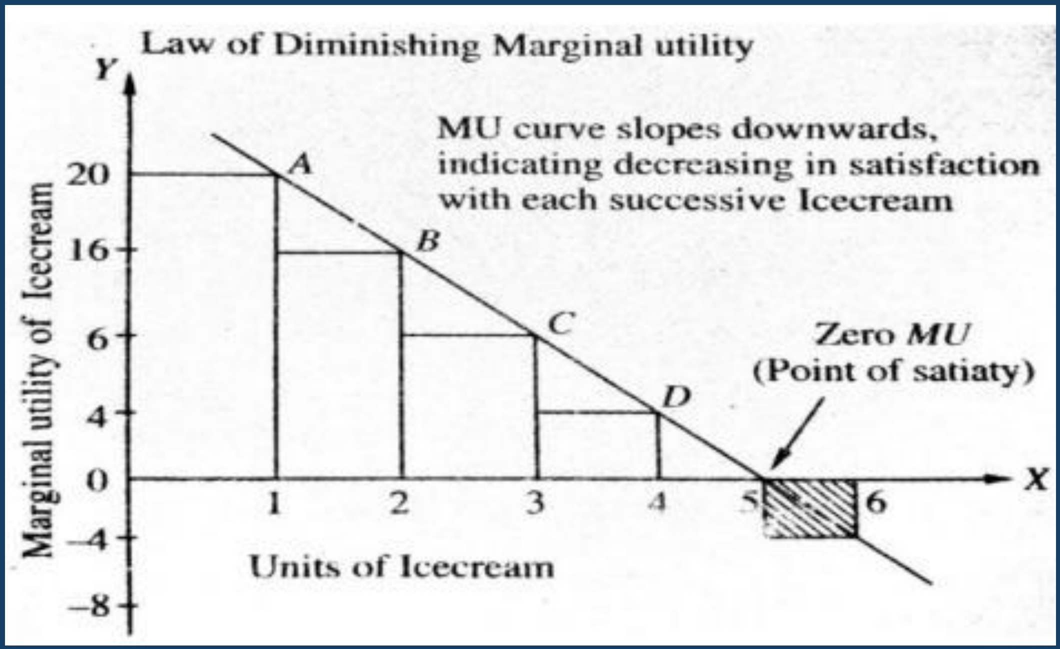

2. बाजार मांग की परिभाषा दीजिए। इससे प्रभावित करने वाले कारकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: बाजार मांग से अभिप्राय एक वस्तु की उस मात्रा से है जिसे बाजार में उपस्थित सभी उपभोक्ता दी गई समय अवधि में प्रत्येक संभव कीमत पर खरीदने को इच्छुक होता है ।

एक वस्तु बाजार की बाजार मांग को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व इस प्रकार है -

1. **वस्तु की कीमत** : किसी वस्तु की मांग उसकी कीमत पर निर्भर करती है । वस्तु की कीमत बदने पर उसकी मांग घट जाती है और इसके विपरीत कीमत घट जाने पर वस्तु की मांग बढ जाती है ।
2. **संबंधित वस्तुओं की कीमतें** : संबंधित वस्तुओं की कीमतें बदने या घटने पर वस्तु की मांग भी प्रभावित होती है ।

3. **उपभोक्ता की आय** : उपभोक्ता की आय और वस्तु की मांग का प्रत्यक्ष संबंध होता है अर्थात उपभोक्ता की आय बदने पर वस्तु की मांग भी बढती है ।

4. **उपभोक्ता की रूचि** : किसी वस्तु की मांग उपभोक्ता की रूचि , आदत से भीं प्रभावित होती है ।

5. **ऋतू में परिवर्तन** :- ऋतू परिवर्तन के साथ ही मांग बदल जाती है जैसे ठण्ड के मौसम ममे गर्म कपड़ो को मांग बढ जाती है ।

6. **जनसँख्या में परिवर्तन** : **जनसँख्या के घटने या बदने से वस्तु मांग घटती या बढती रहती है ।**

3. एक फर्म की कुल स्थिर लागत, परिवर्ती लागत तथा कुल लागत क्या है? वे किस प्रकार संबंधित है?

उत्तर:

कुल स्थिर लागत (Total Fixed Cost) - TFC

स्थिर लागत उस कुल खर्च का जोड़ है जो उत्पादक उत्पादन के स्थिर साधनों की सेवाओं को खरीदने या भाड़े पर लेने के लिए खर्च करनी पड़ती है।

स्थिर लागत उत्पादन के आकार से अप्रभावित रहती है। उत्पादन स्तर शून्य होने पर भी उत्पाद को स्थिर लागतों का भुगतान करना पड़ता है।

TFC = TC - TVC

कुल परिवर्तनशील लागत (Total Variable Cost) - TVC

परिवर्तनशील लागत वह लागत है जो उत्पादन को उत्पादन के घटते बढ़ते साधनों के प्रयोग के लिए खर्च करनी पड़ती है।

परिवर्तनशील लागत का आकार उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करता है। जाती है।

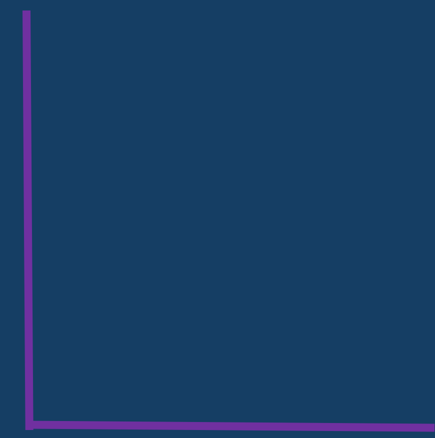

TVC = TC - TFC

चित्र

कुल लागत (Total Cost - TC)

किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा का उत्पादन करने के लिए। उत्पादक को जितनी कुल व्यय करने पड़ते हैं, उनके जोड़ को कुल लागत कहते हैं।

कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्तनशील लागत के योग को कुल लागत कहा जाता है।

TC = TFC + TVC

4. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत अल्पकाल तथा दीर्घकाल में फर्म के साम्य को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर: **पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत किसी फर्म का अल्पकाल में कीमत व उत्पादन का निर्धारण**

पूर्ण प्रतियोगिता में किसी फर्म के पास अल्पकाल में इतना पर्याप्त समय नहीं होता है कि वह माँग में वृद्धि होने पर माँग के अनुरूप पूर्ति को बढ़ा सके।

अल्पकाल में मूल्य-निर्धारण में माँग का प्रभाव पूर्ति की अपेक्षा अधिक होता है। अल्पकाल में फर्म के पास केवल इतना समय होता है कि उत्पत्ति के परिवर्तनशील साधनों को विभिन्न मात्राओं में प्रयोग किया जा सके जिससे कि अधिकतम लाभ हो, किन्तु स्थिर साधनों की मात्रा को नहीं बदला जा सकता।

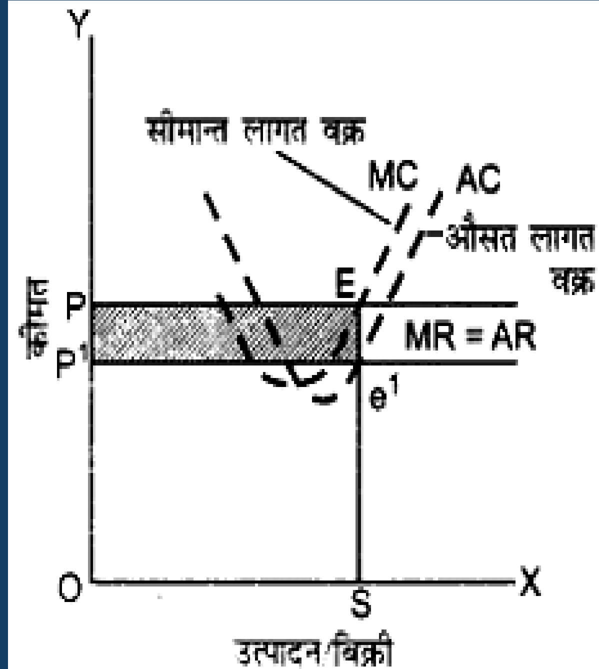

फर्म की लाभ की स्थिति

अल्पकालीन बाजार में पूर्ति को पर्याप्त मात्रा में बदलना सम्भव नहीं होता, इसलिए उसे माँग के साथ पूर्ण रूप में समायोजित नहीं किया जा सकता। अल्पकाल में फर्म को लाभ, शून्य लाभ या हानि भी हो सकती है।

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दीर्घकाल में कीमत व उत्पादन का निर्धारण

दीर्घकाल में फर्म के पास इतना समय होता है कि वे अपने उत्पादन को पूर्णतया माँग में होने वाले परिवर्तनों के साथ समायोजित कर सकती है। दीर्घकाल में फर्म अपने सभी उत्पत्ति के साधनों में परिवर्तन कर उत्पादन को माँग में होने वाले परिवर्तन के अनुसार परिवर्तित करती है। दीर्घकाल में फर्में न तो लाभ अर्जित करती हैं और न हानि उठाती हैं, केवल सामान्य लाभ प्राप्त करती है। लाभ की स्थिति में अन्य फर्म उद्योग में प्रवेश कर जाएगी, उत्पादन बढ़ेगा तथा कीमत कम हो जाएगी।

हानि की स्थिति में फर्म उद्योग छोड़ जाएगी, उत्पादन कम होगा तथा कीमत बढ़ जाएगी। दीर्घकाल में पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में फर्म केवल सामान्य लाभ ही प्राप्त कर सकती है। इस प्रकार दीर्घकाल में फर्म सन्तुलन के लिए दो दशाएँ पूरी होनी चाहिए

- सीमान्त आय (MR) = सीमान्त लागत (MC)
- औसत आय (AR) = औसत लागत (AC)

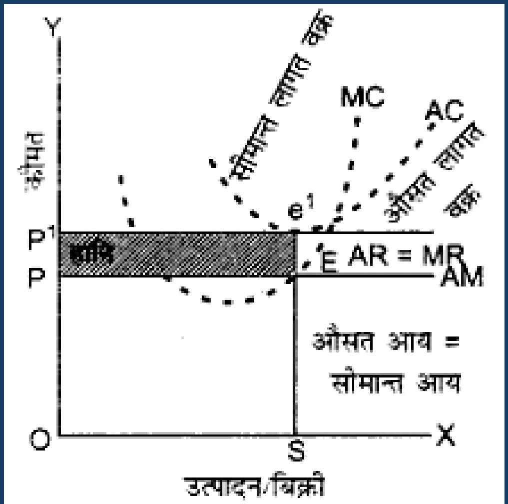

फर्म की हानि की स्थिति

5. केंद्रीय बैंक की रुप में भारतीय रिज़र्व बैंक के मुख्य कार्यों की विवेचना कीजिये।

उत्तर: केंद्रीय बैंक की रुप में भारतीय रिज़र्व बैंक के मुख्य कार्य:-

i. **नोटों का निर्गमन:** देश के भीतर करेंसी नोट छापने का एकाधिकार केवल रिजर्व बैंक के पास है। एक रुपये के नोट को छोड़कर, इसके पास सभी मूल्यवर्ग के करेंसी नोट (वित्त मंत्रालय द्‌वारा जारी) जारी करने का पूरा अधिकार है।

ii. **सरकार का बैंकर:** रिज़र्व बैंक की दूसरी बड़ी ज़िम्मेदारी भारत सरकार और राज्यों के बैंकर, एजेंट या सलाहकार के रूप में कार्य करना है। यह राज्य और केंद्र सरकार के सभी वित्तीय कार्यों का संचालन करता है और सरकार को उपयोगी आर्थिक और वित्तीय नीति सिफारिशें प्रदान करता है।

iii.**बैंकर्स बैंक:** रिज़र्व बैंक अन्य वाणिज्यिक बैंकों को वही कार्य प्रदान करता है जो अन्य बैंक अपने ग्राहकों के लिए करते हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक उन देशों के वाणिज्यिक बैंकों को धन प्रदान करता है।

iv.**क्रेडिट नियंत्रक:** भारतीय रिज़र्व बैंक वाणिज्यिक बैंकों द्‌वारा उत्पन्न ऋण की देखरेख करता है। आरबीआई अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त धन प्रवाह को प्रबंधित करने के लिए विभिन्न उपाय करता हैं ।

v.**विदेशी रिज़र्व संरक्षक:** रिज़र्व बैंक में विदेशी मुद्राओं को खरीदना और बेचना शामिल है और विदेशी मुद्रा दरों को स्थिर रखने के लिए देश की विदेशी मुद्रा निधि को संरक्षित करता है।

6. व्यापारिक बैंक द्वारा साख निर्माण की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: **व्यापारिक बैंक द्वारा साख निर्माण**

आधुनिक बैंको का महत्वपूर्ण कार्य साख का निर्माण करना है। इसीलिए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **शेयर्स** कहते हैं कि **"बैंक केवल मुद्रा जुटाने वाली संस्था नहीं है, वरन मुद्रा का निर्माता भी हैं"।**

व्यापारिक बैंक अपनी जमाओं या निक्षेपों के आधार पर साख निर्माण करते हैं।

बैंको के पास दो प्रकार की जमाए होती है:

प्रारंभिक जमा (Primary Deposits) तथा व्युत्पन्न जमा (Derivative Deposits)

प्रारंभिक जमा (Primary Deposits)

वह जमाराशियां, जो नकदी या वास्तविक मुद्रा के रूप में जमाकर्ताओं द्वारा बैंक में जमा की जाती है। इसे प्रत्यक्ष जमायें कहते हैं।

व्युत्पन्न जमा (Derivative Deposits)

जब कोई बैंक किसी को ऋण अथवा अग्रिम देता है। अथवा प्रतिभूतियों को खरीदकर अपने धन का विनियोग करता है तो ऋण अथवा विनियोग की रकम नकद साख खाते में लिख दी जाती है, जिसे चेक द्वारा निकाला जा सकता है। इस प्रकार उत्पन्न होने वाली जमा राशि व्युत्पन्न जमा साख या द्वितीयक जमा कहलाती है।

साख सृजन करने की प्रक्रिया (WORKING OF CREDIT CREATION)

CRR= 50%, प्रारम्भिक जमा = 1000

बैंक	प्रारम्भिक जमा (₹)	CRR/ LRR	व्युत्पन्न जमा (₹)
A	1000	500	500
B	500	250	250
C	250	125	125

7. गुणक क्या है? इसकी गणना कैसे की जाती है? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर: **गुणक** - गुणक की धारणा कीन्सीयन आय, उत्पादन एवं रोजगार सिद्धांत की एक महत्वपूर्ण धारणा है । कीन्स का विचार था कि अर्थव्यवस्था में जब भी कोई स्वायत्त निवेश किया जाता है, तब आय केवल निवेश के आकर में वृद्धि नहीं होती है बल्कि आय में निवेश के कई गुना अधिक वृद्धि होती है । निवेश की तुलना में आय में जितने गुना वृद्धि होती है उसे गुणक कहते है ।

अर्थात, गुणक निवेश तथा आय के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है । दुसरे अर्थों में निवेश की में आय में हिने वाले परिवर्तन का अनुपातिक सम्बन्ध गुणक कहलाता है ।

कीन्स के अनुसार, " निवेश गुणक से ज्ञात होता है कि जब कुल निवेश में वृद्धि की जाएगी तो आय में जो वृद्धि होगी, वह निवेश में होने वाली वृद्धि से K गुना अधिक होगी ।"

गुणक की गणना निम्न सूत्र किया जा सकता है -

$$K = \Delta Y / \Delta I$$

यहां, ΔY - आय में परिवर्तन ΔI - निवेश में परिवर्तन

उदहारण - यदि किसी समय सरकार अर्थव्यवस्था में ₹20 करोड़ का निवेश करती है तो अर्थव्यवस्था में ₹100 करोड़ की अतिरिक्त आय सृजित होती है । तो निवेश गुणक की गणना कीजिये ।

निवेश गुणक (K) = ΔY / ΔI

ΔY - ₹100

ΔI - ₹20

K = 100 / 20

K = 5

अर्थात निवेश की तुलना में अर्थव्यवस्था की आय में 5 गुना अधिक वृद्धि हुई है ।

8. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत विक्रेता मूल्य स्वीकार करता है, जबकि एकाधिकारी के अंतर्गत बिक्रेता मूल्य निर्धारित करता है, विवेचना कीजिए।

उत्तर: <u>पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत विक्रेता मूल्य स्वीकार करता है</u>

प्रतिस्पर्धी बाजार में , कंपनियां कीमत स्वीकार करने वाली होती हैं। इसका कारण बड़ी संख्या में सजातीय उत्पाद बनाने वाली कंपनियों की उपस्थिति है। इसलिए, कंपनियां अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं में कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती हैं। उन्हें उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत का पालन करना होगा।

निम्नलिखित आंकड़ा पूर्ण प्रतिस्पर्धा के तहत एक फर्म की मांग वक्र को दर्शाता है:

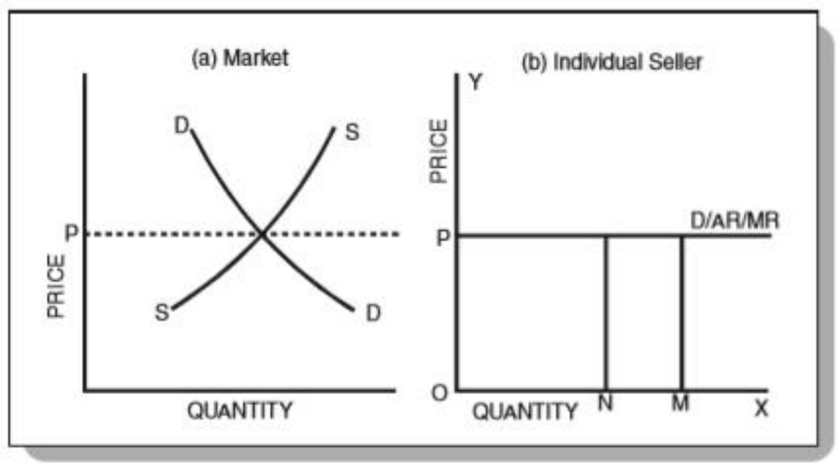

Fig. 2 : The firm's demand curve under perfect competition

एकाधिकारी के अंतर्गत बिक्रेता मूल्य निर्धारित करता है

- एक एकाधिकार वादी को इस सीमांत राजस्व और सीमांत लागत की गणना करने की आवश्यकता है।
- एक एकाधिकार वादी एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन की सीमांत राजस्व और सीमांत लागत का विश्लेषण करके अपने लाभ-अधिकतम मूल्य और मात्रा का निर्धारण कर सकता है।
- यदि सीमांत आगम सीमांत लागत से अधिक है, तो फर्म को अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करना चाहिए।
- ताकि एकाधिकारी को नुकसान न हो।
- तो इस तरह एकाधिकार के लिए कीमत निर्धारित की जाती है।

9. अनैच्छिक बेरोजगारी से आप क्या समझते हैं? अनैच्छिक बेरोजगारी के विभिन्न कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: एक ऐसी स्थिति जिसमे ऐसे लोग जो कुशल तथा योग्य होते है और एक न्यूनतम मजदूरी दर पर कार्य करने के इच्छुक भी होते है किन्तु उन्हें काम नही मिलता है, अनैच्छिक बेरोजगारी कहते है। यह स्थिति काम के अभाव के कारण उत्पन्न होती है।

अनैच्छिक बेरोजगारी के कारण :-

1. **जनसँख्या विस्फोट :** जनसँख्या में होने वाली अत्याधिक वृद्धि के कारण सबकी उसी अनुपात में रोजगार दे पाना संभव नहीं होता है।
2. **शिक्षा की दयनीय स्थिति :** वर्तमान शिक्षा प्रणाली से लोग केवल नौकरी करना चाहते है लेकिन मेहनत करना नहीं चाहते है।
3. **कुटीर उद्योगो का ह्रास:** अधुनिकीकरण के नाम पर कुटीर उद्योगों का नष्ट होना भी बेरोजगारी का बहुत बड़ा कारण है।
4. **मशीनीकरण :** उद्योगों में मशीनों का प्रयोग होने तथा कंप्यूटर के प्रयोग से भी बेरोजगारी बड़ी है।
5. **पूंजी में कमी :** भारत में पूंजी निर्माण की दे बहुत धीमी होने के कारण भी बेरोजगारी बड़ी है।

10. एक अर्थव्यवस्था में वास्तविक आय ₹500 करोड़ है। जबकि पूर्ण रोजगार पर आय ₹800 करोड़ है। यदि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति 0.75 हो तो कितना निवेश बढ़ाया जाए कि पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त हो जाए?

उत्तर:

$$\Delta Y = ₹800$$

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) = 0.75

$$K = \frac{1}{1-MPC}$$

$$K = \frac{1}{1-0.75} \qquad K = \frac{1}{0.25} \qquad K = 4$$

NOW,

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I} \qquad 4 = \frac{800}{\Delta I}$$

$$\Delta I = 800/4 = 200$$

LIKE AND *SHARE* THE CLASS LINK

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @dhalinakul

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

To Download PDF, visit my website *www.theeconomicsguru.com*